आयोजन

बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र पर तीन दिवसीय संगोष्ठी शुरू

मसाला फसलों के सुगंधित तेलों का उत्पादन व निर्यात बढ़ाने पर जोर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

अजमेर. मसाला व संबंधित फसलों के निर्यात को आगामी वर्षों में बढ़ाने का आह्वान किया गया। मसाला फसलों के सुगंधित तेल घटकों के आंकलन एवं मूल्य सवंर्धित उत्पादन को बढ़ाने पर जोर देने की जरूरत है। यह बात मुख्य अतिथि, नई दिल्ली के कृषि वै.च.म. के अध्यक्ष संजय कुमार ने कही। वह बुधवार को तबीजी में भारतीय बीजीय मसाला केन्द्र में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

अजमेर. राष्ट्रीय संगोष्ठी में मंचासीन अतिथि व मौजूद लोग।

उन्होंने स्वचालित मौसम तंत्र (ऑटोमेटिक वेदर स्टेशन) का उद्घाटन भी किया। कार्यक्रम भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद व राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र तबीजी एवं मसाला एवं सुपारी अनुसंधान निदेशालय, कालीकट के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिन चलेगा। विभिन्न राज्यों के 150 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। संगोष्ठी में बीजीय मसाला फसलों से संबंधित प्रकाशनों का विमोचन भी किया गया।

यह वैज्ञानिक व संस्थाओं के प्रमुख रहे मौजूद : उद्घाटन समारोह में डॉ. पी. एल. गौतम, कुलाधिपति, केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार, डॉ. एस. के. मल्होत्रा, कुलपति, महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल, डॉ. एन. के. कृष्ण कुमार, पूर्व उप महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, डॉ. वी. बी. पटेल, सहायक महानिदेशक, बागवानी, नई दिल्ली, डॉ. जगदीश राणे, निदेशक, के.शु.बा.सं., बीकानेर, डॉ. मनीषदास, निदेशक, आनंद एवं डॉ. विनय भारद्वाज, निदेशक, रा.बी.म.अनु.के. विशिष्ट अतिथि रहे।

इन्होंने भी रखे विचार

डॉ. पी. एल. गौतम ने मसालों के औषधीय गुणों एवं वैश्विक गुणवत्ता मानकों को ध्यान में रखकर उत्पादन करने की सलाह दी। उन्होंने मसाला फसलों का चार्टर व डिकलेरेन पत्र बनाने पर भी जोर दिया। सिरोही सौंफ, बाड़मेर जीरा, नागौरी मेथी के जीआई टेग के लिए भी आह्वान किया। डॉ. भारद्वाज, निदेशक, रा.बी.म.अनु. केन्द्र ने संस्थान के अनुसंधान जीनोम एडिटिंग एवं जीरे की नई किस्मों के विकास की जानकारी दी।

शोधपत्र प्रस्तुत किए

दिल्ली, महाराष्ट्र, कर्नाटक, बिहार, जम्मू कश्मीर, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश द्वारा 150 अनुसंधान शोध पत्र प्रस्तुत किए जाएंगे और बीजीय मसाला फसलों में भविष्य के शोध दिशा का निर्धारण होगा। प्रथम दिन 2 सत्रों में 45 शोध पत्र प्रस्तुत किए। मुख्य रूप से फसल सुधार, जननद्रव्य एवं उन्नत कृषण क्रियाओं पर चर्चा की गई। बीजीय मसाला फसलों में शोध कार्य करने वाले विभिन्न वैज्ञानिकों को सम्मानित किया जाएगा।

आईसीएआर में राष्ट्रीय संगोष्ठी • पहले दिन 45 शोध पत्र पढ़े, मसालों के अंतरराष्ट्रीय मानक तय करने पर सहमति

कृषि वैज्ञानिकों ने कहा-मसालों के पैकेट्स पर कंटेंट और उपयोग पर होने वाले प्रभाव की जानकारी भी दें

सिटी रिपोर्टर | अजमेर

राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र (आईसीएआर) तबीजी में बुधवार को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आगाज हुआ। दिन दिवसीय इस संगोष्ठी में देश भर के कृषि वैज्ञानिक शामिल हुए हैं। आईसीएआर और मसाला एवं सुपारी अनुसंधान निदेशालय कालीकट के संयुक्त तत्वावधान में हो रहे इस आयोजन में कृषि वैज्ञानिकों ने मसालों के पैकेट्स पर कंटेंट और इसके प्रभाव दुष्प्रभावों की जानकारी देना जरूरी बताया है। रिसर्च के दायरे बढ़ाकर मसालों की किस्में तैयार कर निर्यात को बढ़ावा देने की बात कही गई है। आईसीएआर ने निर्यात 4 बिलियन डॉलर से बढ़ाकर 10 बिलियन डॉलर करने का लक्ष्य भी जाहिर किया है।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि एएसआरबी नई दिल्ली के चेयरमैन प्रोफेसर संजय कुमार, विशिष्ट अतिथि आईसीएआर सीआईएचच बीकानेर के डॉ. जगदीश राने, आईसीएआर आणंद गुजरात के डॉ. मनीष दास, आईसीएआर दिल्ली के डॉ. वीबी पटेल, पूर्व डीडीजी एचएस. एनके कृष्णकुमार, आरपीसीएयू पुसा बिहार के कुलपति डॉ. पीएल गौतम सहित अन्य वैज्ञानिकों ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आईसीएआर तबीजी के डायरेक्टर डॉ. विनय भारद्वाज ने की।

आईसीएआर तबीजी में बुधवार को हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी में शामिल कृषि वैज्ञानिक।

निर्यात बढ़ाने के लिए किसान गुणवत्तापूर्ण पैदावार करें

उद्घाटन सत्र में अतिथि वैज्ञानिकों ने कहा कि मसालों का निर्यात बढ़ाने के लिए ज्यादा और गुणवत्तापूर्ण पैदावार करना होगी। किसानों को उन्नत संसाधन, बीज, सरकारी मदद भी मिलना जरूरी है। वैज्ञानिकों का कहना था कि पैकेट्स पर यह जानकारी दी जानी चाहिए कि किस मसाले का कितना प्रयोग करना चाहिए? इससे ज्यादा होने पर शरीर पर क्या प्रभाव पड़ सकते हैं। डॉ. संजय कुमार ने उदाहरण देकर बताया कि दालचीनी का उपयोग एक दिन में 5 ग्राम ही करना चाहिए। इससे ज्यादा उपयोग करने से किडनी पर इसका गलत असर हो सकता है।

सौंफ, जीरा, मेथी के जीआई टैग जरूरी: कृषि वैज्ञानिकों ने सुझाव दिए कि मसालों को अंतरराष्ट्रीय बनाने की जरूरत है। यह पैरामीटर जल्द बनाने होंगे ताकि उपभोक्ता को हर मसाले के उपयोग करने, इसके फायदे और नुकसान की भी जानकारी हो सके। डॉ. पीएल गौतम ने मसालों के औषधीय गुणों और वैश्विक गुणवत्ता मानकों को ध्यान में रखकर उत्पादन करने की सलाह दी। उन्होंने मसाला फसलों का चार्ट और डिक्लेरेशन पत्र बनाने पर भी जोर दिया। सिरोही सौंफ, बाड़मेर जीरा, नागौरी मेथी के जीआई टैग के तैयार करने का सुझाव दिया।

150 से ज्यादा स्कॉलर साइंटिस्ट सहित 200 से ज्यादा लोग शामिल

संगोष्ठी में देश के विभिन्न हिस्सों से 150 से ज्यादा स्कॉलर कृषि वैज्ञानिकों के साथ ही 50 से ज्यादा वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक, किसानों और इंडस्ट्री से जुड़े लोग भी शामिल हुए है। उद्घाटन सत्र में आईसीएआर तबीजी के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज ने संस्थान में किए जा रहे रिसर्च की जानकारी भी दी। इस दौरान बीजीय मसाला फसलों से संबंधित प्रकाशनों का विमोचन भी किया गया।

कई राज्यों के 150 शोध पत्र रजिस्टर्ड: कार्यक्रम में राजस्थान के अलावा दिल्ली, महाराष्ट्र, कर्नाटक, बिहार, जम्मू कश्मीर, गुजरात, मध्य प्रदेश से कुल 150 शोध पत्र रजिस्टर्ड किए गए हैं। यह शोध पत्र तीन दिनों में पढ़े जाएंगे। पहले दिन दो सत्रों में 45 शोध पत्रों का वाचन किया गया।